Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

रामदरश मिश्र की काव्य भाषा

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

रामदरश मिश्र की काव्य भाषा

Dr. Manju Sharma

Asst. Prof. Hindi, Seth Banarasi Dass College of Education, Kurukshetra, Haryana, India

----------X----------

भाषा मानव–मन की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। मन के अनेक स्तर भाषा की सहायता से खुलते हैं, मनुष्य की सौन्दर्यानुभूति का स्तर उनमें एक है। हमारी समस्त अनुभूतियों एवं भावों को समर्थ अभिव्यक्ति देने की क्षमता भाषा में नहीं है, पिफर भी उन्हें सामाजिक सम्पर्क में लाने का काम भाषा करती है। लेकिन कविता की श्रेष्ठता एवं वरीयता इस बात में है कि उसमें अन्य ललित कविताओं की विशिष्टताएँ समाहित रहती हैं और उसके प्रेषण का माध्यम 'भाषा' मनुष्य के लिए सर्वाधिक सहज और परिचित है। इसी कारण उसमें प्रभावोत्पादकता अधिक रहती है। काल की दृष्टि से भी भाषा अधिक व्यापक है।

काव्य भाषा के सम्बन्ध में अंग्रेजी समीक्षकों ने विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। 'ओवेन बार पफोल्ड' ने अपनी पुस्तक 'पोएटिक डिक्शन' का आरम्भ करते हुए काव्य भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है–फजब शब्दों का चयन और नियोजन इस प्रकार से किया जाए कि वह सौन्दर्य तत्वात्मक कल्पना को जागृत करने की चेष्टा करे तो चयन के परिणाम को कलात्मक शब्द समूह कहा जाएगा।

सामान्य भाषा और काव्य भाषा :

भाषा कवि–धर्म का मूल है। बाह्य सौन्दर्य से प्रभावित होकर चित्राकार जैसे अपनी आकांक्षा को रंग एवं तूलिका के सहारे व्यक्त करना चाहता है और संगीतकार स्वरों की झंकृति के सहारे, ठीक उसी प्रकार कवि उसे भाषा के सहारे स्थापित करना चाहता है यह भाषा अन्य साधनों की अपेक्षा अत्यन्त प्राचीन है। काव्य भाषा जो कल आने वाली है वह आज की समर्थ काव्य भाषा में उपस्थित है।

फभले ही नये के आगमन और पुराने की विदाई की विलम्बित छाया कभी–कभी वर्षों का समय घेर लेती है जिसमें भाषा, काल, नाम, युगखण्ड आदि का स्पष्ट और दो टूक निर्णय असम्भव–सा हो जाता है। वस्तुतः भाषा के जिस परिपाटीब(रूप में साहित्य–सर्जना होती रहती है वह रूप समय के अन्तराल में अनवरत व्यवहार से घिर जाता है और संभावनाएँ चूक जाती हैं, पिफर वह भाषा का स्वरूप जड़ हो जाता है।

फकविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ–सम्बन्धों के संकुचित मंडल से उठाकर लोक–सामान्य भावभूमि पर ले जाती है . . .।

फ्सादगी, असलियत और जोश ;मिल्टन के बताये हुए तीनों गुणद्ध यदि ये तीनों गुण कविता में हो तो कहना ही क्या है परन्तु बहुधा अच्छी कविता में भी इनमें से एक–आध गुण की कमी पाई जाती है। कभी–कभी देखा जाता है कि कविता में केवल जोश रहता है, सादगी और असलियत नहीं। कभी–कभी सादगी और जोश पाये जाते हैं असलियत नहीं। परन्तु बिना असलियत के जोश का होना कठिन है। अतएव कवि को असलियत का सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिए।

फकाव्य भाषा सामान्य भाषा से इस रूप में भी पृथक् है कि सामान्य भाषा का अधिकारी सहृदय पाठक कवि की भाषा पढ़कर या सुनकर, उसको समझते हुए उसका अर्थ–विस्तार अपनी सामान्य बोलचाल की भाषा में करता है। भाषा की उसी उत्कृष्ट व्यंजना शक्ति का कवि अभिज्ञाता एवं उसका कुशल प्रयोगकर्त्ता होता है और इसी दृष्टिकोण से वह सामान्य–हृदय व्यक्ति से पृथक् व्यापक हृदय वाला होता है। हृदय–विस्तार एवं संवेदनशीलता के वैयक्ति अन्तर से कविगत काव्य–भाषा का विस्तार होता है, यही कारण है कि सभी कवियों की रचनाओं का स्तर समान नहीं होता।

काव्य भाषा और जन भाषा का अन्तर :

काव्य–भाषा एवं जन–भाषा का अन्तर व्याकरण विषयक है। जन–भाषा व्याकरण एवं परम्परित–मार्जित भाषा प्रयोगों से विपथन में विश्वास रखती है। वह नियमों को सहजतः त्याग देती है। मुख सुख से वह प्रयोग या प्रचलन के प्रति अभिमुख होती चलती है। पर काव्य–भाषा बहुत दूरी तक श्रुत्य भाषा के व्याकरणिक नियमों का उल्लंघन करती है, जहाँ संवेदना एवं अभिव्यक्ति के तनाव में व्याकरण झटके खाने को मजबूर हो जाता है अथवा लय, छन्द आदि काव्य रूढ़ियों के आग्रहवश उनकी मर्यादा का निषेध होता है। मुख्य बात तो यह है कि काव्य–भाषा का व्याकरणिक विपथन शैली की विच्छित लेकर आता है पर जन–भाषा में ऐसी बात नहीं होती।

फकाव्य–भाषा और जनभाषा का पहला अन्तर अर्थ की दृष्टि से है। अर्थ की दृष्टि से जन भाषा शब्द के सामान्य प्रचलन और सतही अर्थ को जताती है। व्यहारोपयोगी जनभाषा में शब्दों का अर्थ प्रायः सुनिश्चित होता है, किन्तु वह शब्द के भीतरी गहरे और विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करती है। यहाँ अर्थ की एक साथ कई सतहें होती हैं। उन सतहों में परस्पर समता भी हो सकती है और विरोधी तनाव भी हो सकता है। इस अन्तर का मूल कारण समय–सीमा ही है। अतः यह सामान्यजन भाषा का अपना औचित्य है कि वह शब्दों के एक सुनिश्चित अर्थ को उचित और वांछनीय समझती है, जबकि काव्य भाषा अर्थ की स्थूलता को तोड़कर उसकी अमूर्त्त और उन्मुक्त प्रकृति को पुनः स्थापित करती है।

काव्य–भाषा के वैशिष्ट्य :

काव्य भाषा कुछ विशिष्ट गुणों से समन्वित रहती है। उसकी उपयोगिता शब्द–सौन्दर्य के सामंजस्य विधान पर अवलम्बित है। इस सामंजस्य–विधान को हम भाव एवं भाषा का सम्बन्ध कह

www.ignited.in

सकते हैं। काव्य के भाव तत्त्व, कल्पना तत्त्व और बुि(तत्त्व का सम्बन्ध तो कवि की आन्तरिक क्रियाओं से होता है, पर इन आन्तरिक क्रियाओं द्वारा निर्मित साध्य रूप को प्रत्यक्ष उपस्थित करने का कार्य भाषा करती है। निम्नलिखित उदाहरणों में मिश्र जी द्वारा बुद्धि कल्पना एवं भावों का सुन्दर प्रयोग हमें उनकी प्रशंसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

मानव का हृदय असंख्य भावों, अनुभूतियों की क्रीड़ास्थल है। प्रेरणा, करुणा, हर्ष, विषाद आदि भाव उसमें सदैव विद्यमान रहते हैं। कवि मिश्र जी की काव्य रचनाओं से भाव–प्रवणता की तीव्रता अनेक स्थलों पर विद्यमान है।

कवि की मन प्रेयसी की निष्ठुरता पर दुःख व्यक्त करता है। 'हर सिंगार की डाली तूने झकझोर दी' कविता में इसी भाव को वाणी मिली है–

फहर सिंगार की डाली तूने झकझोर दी

पूफल जो कि रात भर झरे

वे भी तेरे थे

डाली पर जो रहे भरे

वे भी तेरे थे

प्रीति की प्रतीति हाय। क्यों तूने तोड़ दी।

कवि अपनी खण्ड अनुभूतियाँ मार्मिक सौन्दर्यमयी कल्पना द्वारा व्यक्त करता है। वह रूप विधान, बिम्ब, प्रतीक, रूपमान आदि के प्रयोग से अपनी कृति में 'अपूर्व सौन्दर्य' का सृजन करता है। इस काव्य–दृष्टि में सौन्दर्यमयी कल्पना महत्त्वपूर्ण योगदान करती है। मिश्र जी की रचनाओं में भी सुन्दर कल्पनाएँ भरी पड़ी हैं।

कवि ने संध्या को तालाब में नहाती एक नायिका के रूप में कल्पित किया है–

फसंध्या स्नान के लिए उतरी

जल में पीली धूप तट पर वस्त्रा

सिहर अपने में सिमटा जाता रूप

एक पर्त बिछ रही सतह पर

धीरे–धीरे श्याम।

काव्य–भाषा के महत्त्व पर विचार करते हुए पन्त जी ने अत्यन्त आश्वस्त रूप में यह स्वीकार किया है–फभाषा मनुष्य के हृदय की कुंजी है और किसी भी देश या राष्ट्र से संगठन के लिए अत्यन्त सबल साधनों में से है। भाषा हमारे मन का परिधान या लिबास है। उसके माध्यम से हम अपने विचारों, आदर्शों, सत्य–मिथ्या को मानों तथा अपनी भावनाओं एवं अनुभूतियों का सरलतापूर्वक व्यक्त कर एक–दूसरे के मन में वाहित करते हैं।

मिश्र जी के काव्य में शब्द योजना :

मिश्र जी की भाषा में विभिन्न भाषाओं की शब्दावली का प्रयोग हुआ है। अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए जिस भाषा का जो भी शब्द अनुकूल और उचित लगा, मिश्र जी ने निस्संकोच उसका उपयोग किया है।

तत्सम् :

तत्सम् वे शब्द हैं, जो संस्कृत से आए हैं और बिना किसी विकार या परिवर्तन के हिन्दी भाषा के अंग बन गए हैं अर्थात् जो अपने मूल रूप से ही प्रयुक्त होते हैं, मिश्र जी ने संस्कृत बहुला परिनिष्ठित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है। संस्कृत के तत्सम् शब्द उनके काव्य में अधिकांशतः आए हैं–प्रतिकूल, गौरव, समय, पर्वत, विचित्रा, संसृति, दामिनी, विहग, शर, उज्ज्वल, पाप, पुण्य, शूल, धरा, शोणित, तिमिर, सुरभि, हास, रुधिर, प्रान्तर, जीवन, वासन्ती, स्नेह, अधर, नीड़, शरद, विहगी, विस्मृति, शैशव, शरद, तम, मलय, पवन, तरु, पुलकित, पद, तिमिर, दिवस, सहस्त्रा आदि।

तत्सम् शब्दों के अंतर्गत प्रचलित एवं अप्रचलित दोनों प्रकार के शब्द मिश्र जी की काव्य भाषा में प्रयोग हुए हैं। मिश्र जी द्वारा प्रयुक्त शब्दों की यह विशेषता है कि ये भावानुकूल सहज और सरल हैं और न ही ये सम्प्रेषण में बाध्क बनते हैं। मिश्र जी ने निराला की भाँति तत्सम् शब्दों से ओज उत्पन्न करने का प्रयास किया है। अतः उनके तत्सम् शब्द ओज गुण में सहायक हैं। मिश्र जी ने प्रेमपरक रचनाओं एवं मुक्तकों या गीतों में भी तत्सम् शब्दों को अपनाया है। इसके अतिरिक्त मिश्र जी ने दार्शनिकता के भाव वाले काव्य में भी तत्सम् शब्दों का चयन किया है। जैसे–मृदु, वार, कल्पित, सुमधुर, पावन, अविरल, वादक, विक्रेता, प्रविष्ट, नीरद, उद्गार, प्रहरी, क्रीड़ा–स्थल, आहार, पतनोत्थान, विस्मरण, उपहास, सुषमा, वातायन, तृष्णा, कमनीय, उत्कंठित, महिमा, वाचाल, आसव, भ्रमित, ललाम, नूतन, कुंज, व्यूह, मोहित, गर्वोन्मत्त, कृपाण, अंकुरिम, वृष्टि, प्रवीण, प्रतोक्षा, जलज, संस्कृति, शिशु, उदार, संशय, वैभव, समता, अमित, तन्मय, क्लिष्ट, अल्पश शाप, तर्जनी, तुषार, घायल, द्वार, तृप्त, द्दतु, पंकज, मंजुल, प्रत्याशित, विश्वासघाती, आगाह, मार्मिक, रुग्ण, महत्त्वाकांक्षी आदि।

तद्भव शब्द :

तद्भव वे शब्द हैं जो संस्कृत से उत्पन्न है अर्थात् जिन शब्दों का मूल स्रोत तो संस्कृत है परन्तु हिन्दी में उनका प्रयोग मिश्रित रूप में होता है। मिश्र जी के काव्य में प्रयुक्त तद्भव शब्द इस प्रकार हैं– अनाज, आज, आग, उंगली, गिनती, घर, तीन, चोरी, चौथा, चाँद, तीखा, छः, जुआ, तन, होंठ, ऊँचा, काम, कान, गाँव, दूध, दस, धुआं, पत्थर, नींद, पूरब, पानी, पहर, पाँव, पीछे, भाप, मक्खी, गत, मोती, नया, रात, सूरज, साँस, दर्द, बादल, साँप, नदी, खेत, चाँदी, कुल्हाड़ी, अंधियाली, सच्चा, पैसा, ताला, हंसी आदि।

प्रायः प्रत्येक कवि तद्भव शब्दों के प्रयोग द्वारा अपनी भाषा को सहज एवं मधुर बनाने की कोशिश करता है। तद्भव शब्दों के प्रयोग से भाषा में सहजता एवं स्वाभाविकता तो आती ही है। साथ ही काव्य में उत्कर्षता भी आती है। मिश्र जी के काव्य में तद्भव शब्दों का सुन्दर चयन मिलता है। जैसे–'दिवस' त्र दिन, 'गृह'त्र 'घर' आदि। मिश्र जी ने सामान्य व्यवहार में आने वाले शब्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। शब्द चयन में इन्होंने सर्वत्रा सावधनी बरती है। इसी कारण साधरण शब्दों के प्रयोगों से काव्य में चमत्कार आ गया है। मिश्र जी के काव्य में प्रयुक्त कुछ तद्भव शब्द इस प्रकार हैं–माटी, हवाओं, जड़,

www.ignited.in

दिन, गाँव, सिर, काला, वर्षा, हँडिया, दुनिया, हाथ, पानी, मन, पाँव, पत्थर, छाती, सच, मुँह, खेल।

देशज शब्द :

जनमानस के भावों के आदान–प्रदान के लिए प्रयुक्त भाषा में बहुत से ऐसे शब्द प्रचलित रहते हैं, जिसकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता। कवि या लेखक भाषा की सरलता और सहजता के लिए देशज या स्थानीय शब्दों का प्रयोग करता है। यद्यपि ऐसे शब्द प्रयोग अर्थ की दृष्टि से सामान्य ही होते हैं, लेकिन इनके प्रयोग से वातावरण सजीव हो उठता है और भाषा में जनपदीय सहजता और ग्राम्य जीवन के चित्रा सरलता से अंकित किए जा सकते हैं। साथ ही इस अभिव्यक्ति से ग्राम्य संस्कृति का परिचय मिल जाता है। मिश्र जी के काव्य में देशज शब्द भी पर्याप्त मात्राा में मिलते हैं। कवि के काव्य का एक उदाहरण द्रष्टव्य है जिसमें देशज शब्दों का सुन्दर प्रयोग मिलता है–

चर्खा, चूल्हा, चक्की, ध्न्धें, जोवन, होठों, सुहाया, प्लमाला, बड़प्पन।

विदेशी शब्द :

मिश्र जी की काव्य भाषा में तत्सम्, तद्भव तथा देशज शब्दों के अतिरिक्त विदेशी शब्दों का भी प्रचुर मात्राा में प्रयोग हुआ है। जिस प्रकार तद्भव एवं देशज शब्द स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए हैं, उसी प्रकार विदेशी शब्द भी जनजीवन से संबंध्ति प्रतिपाद्य के अनुकूल भाषा निर्माण के लिए स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए हैं। यह प्रयोग कवि की शैली को अनूठा बल प्रदान करता है। मिश्र जी ने अपनी अभिव्यक्ति में अर्थ गाम्भीर्य भरने के लिए अरबी–पफारसी शब्दों का प्रचुर मात्राा में प्रयोग किया है। उर्दू के शब्दों के प्रयोग से वे हिंदी का हित समझते हैं। उन्होंने अंग्रेजी, उर्दू, अरबी व पफारसी शब्दों का प्रयोग किया है। यथा–

पफारसी शब्द :

मजदूर, गज़, गरमी, बीवी, खिदमत, दीवार, खून, आसमान, गरम, हमेशा, शहर, दफ्रतर, जमीन, बाजार, पैगम्बर, खुदा, कमीज, जिन्दगी आदि।

अरबी शब्द :

मजहब, मुसीबत, मुश्किल, मौत, हैरान, हंटर, ईसा, हवा, दिमाग, साइकिल, खबर, आदमी, इन्सान, हिम्मत, इन्सानियत, हिसाब।

उर्दू शब्द :

अक्सर, तरपफ, बुजुर्ग, सिपर्फ, शराब, गोपिफल, करीब, बेहद, कब्जा, शायद, दरअसल, पुफर्सत, जुकाम, बद्मश्त, अन्दाज, पफर्क, अरसे, वक्त, इस्तेमाल, ज़िन्दगी, मोहब्बत, कागज, जरूर, इन्सान, खत्म, जहाज, मुसापिफर, इजाजत, यकीन, मुश्किल, वकालत, मगर, रवाना, ख्याल, अन्दाज, मसीहा, गजब, बेचारा, बेखबर, मजाक, बेवक्त, कमीज, दहशत, खबर, खूबसूरत, जुल्पफों, तकलीपफ, बेहोश, मस्जिद, आवाज़, लाशें, सबूत, खुद, मनहूस, महज़, खबर, जमीन, लबालब, बुनियाद, खूबसूरत, चिन्गारी, पफर्क, सिपर्फ, सूली, कम्बख्त, हत्या, पफौलादी, बेवजह।

अंग्रेजी शब्द :

पोस्टर, क्रास, पफायर ब्रिगेड, बेंच, ट्रेन, टेबल, साइनबोर्ड, पेपरवेट, पफाइल, प्लान, रजिस्टर, लाइन, पैरेम्बुलेटर, स्ट्रीट–लाईट, स्टेशन, सिगनल, डाउन, आइस, लैम्प, स्कूल, ऑपिफस, ैस्टाइल, मेनहोल, क्लब, थियेटर, पालिश, फ्रिलट, पब्लिक, गटर, ब्रश, क्लोरोपफार्म, इंजीनियर, ेम, क्रॉसिंग, ट्विस्ट, ऑप्रेशन–टेबल, नेमप्लेट, प्लेस, स्टेज, साइज, पिन, रिकार्ड, ड्यूटी, कैमरा, पोस्टकार्ड, पैग, सिनेमा, रोलर।

जिस प्रकार अरबी–पफारसी के प्रचलित शब्द हिन्दी–साहित्य में अपनाए गए, उसी प्रकार जनजीवन में प्रचलित अंग्रेजी के भी सामान्य शब्दों को अपनाया है। ऐसे शब्दों का प्रयोग आधुनिक साहित्य में देखने को मिलता है। इसी प्रकार दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले लैम्प, करेन्ट, स्कीम, स्कूल जैसे अनेक शब्दों को मिश्र जी ने बड़ी सरलता से ग्रहण किया है। अंग्रेजी के शब्दों का चयन मिश्र जी ने उन्हीं स्थलों पर किया है जहाँ इनसे अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने और वातावरण के निर्माण में सहायता मिली है।

साधरण शब्द :

छिछोरा, पफक्कड़, रस्सी, मनहूस, मूरख, रगड़ा, अन्ध, बहरा, बेर, बुनियाद, बासी, घिनौना, कम्बख्त, कसम, न्यायधीश।

निष्कर्ष :

मिश्र जी का काव्य भी सोद्देश्य है। वे काव्य की समाज–सापेक्ष के समर्थक हैं। कवि की काव्य–भाषा ने निश्चय ही अपने पाठकों के हृदय पर प्रभाव अंकित किया है। अतः मिश्र जी ने अत्यन्त सरल, सुबोध व स्पष्ट काव्य की रचना द्वारा अपने भावों को अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची :

1. डॉ॰ शिवशंकर निराला की काव्य भाषा, पृ. 13
2. डॉ॰ रामस्वरूप चतुर्वेदी, भाषा और संवेदना, पृ. 12–13
3. वही, चिन्तामणि, भाग–1, पृ. 192
4. वही, रसज्ञ, र×जन, पृ. 51
5. डॉ॰ रामकुमार वर्मा, आधुनिक हिन्दी काव्य भाषा, पृ. 23
6. डॉ॰ रामस्वरूप चतुर्वेदी, भाषा और संवेदना, पृ. 35
7. डॉ॰ रामदरश मिश्र, मेरे प्रिय गीत, पृ. 28
8. डॉ॰ रामदरश मिश्र, मेरे प्रिय गीत, पृ. 01
9. दृष्टव्य, डसॅ॰ रमेशचन्द्र गुप्त, छायावाद की भाषा, पृ. 46